GEOGRAPHY

01

(Q.) Describe the characteristics of agricultural regions of Bihar.
बिहार के कृषि प्रदेशों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Ans ⇒ बिहारवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। इस राज्य की 60% आबादी इस कार्य में लगी है। राज्य का GDP का 40% कृषि से प्राप्त होता है। भौगोलिक भिन्नता के अनुसार राज्य के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलें जैसे- चावल, गेहूँ, मकई, गन्ना, जूट एवं चना इत्यादि उपजाए जाते हैं।

पी. दयाल ने बिहार के संदर्भ में अपनी पुस्तक Bihar in map (1953) में शस्य संयोजन के ऊपर अपना विचार प्रस्तुत किये थे। विभिन्न क्षेत्रों में फसलों की महत्ता को ध्यान में रखकर कृषि प्रदेश का निर्धारण किये थे।

इनायत अहमद ने अपनी पुस्तक Bihar: A Physical Economic and Regional Geography (1965) में फसलों के उत्पादन के आधार पर बिहार के कृषि प्रदेशों का निर्धारण किया है।

1968 ई० में अंतर्राष्ट्रीय भूगोल कांग्रेस की संगोष्ठी के समय पी० दयाल महोदय ने Regional Geography of Bihar Plain में बिहार की किस भाग में कौन-सी मुख्य फसल उपजती है। इसको इन्होंने कृषि प्रदेश में विभाजित करने में आधार माना।

⇒ कृषि-प्रदेशों में विभाजन का विधितंत्र:-

बिहार के कृषि प्रदेशों में विभाजित करने के लिए निम्नलिखित

2020-7-22

(ख) सांख्यिकी विधियों को आधार माना गया है-

*→ वीवर की विधि:- वीवर की विधि मानक विचलन पर आधारित है जिसका सूत्र इस प्रकार है:-

$$S.D = \frac{\Sigma d^2}{N}$$

वीवर विधि को स्पष्ट करने के लिए भागलपुर जिले के सात फसलों को प्रस्तुत किया जाता है यहाँ मकई 28%, गेहूँ 22%, चावल 21%, अरहर 28% तथा गन्ना 2.35% क्षेत्र में उपजाया जाता है।

(1) एक फसल प्रधान वाला शस्य

$$\text{संयोजन} = \left(\frac{100-28}{1}\right)^2 = 5184$$

(2) दो फसल वाला शस्य संयोजन $= \frac{(50-25)^2+(50-22)^2}{2}$

$= 634.02$

(3) तीन फसल वाला शस्य संयोजन $= \frac{(33.3-28)^2+(33.3-22)^2+(33.3-21)}{3}$

$= 102.36$

(4) चार फसल प्रधान वाला शस्य संयोजन

$$= \frac{(20-28)^2+(20-22)^2+(20-21)^2+(20-28)^2+(20-1.35)^2}{5}$$

$= 87.00$

(5) पाँच फसल प्रधान वाला शस्य संयोजन

$$= \frac{(20-28)^2+(20-22)^2+(20-21)^2+(20-28)^2+(20-1.35)^2}{5}$$

$= 108.46$

2020-7-22

* कृषि प्रदेशों के विभाजन का आधार:-

बिहार राज्य को कृषि प्रदेशों में विभाजन के निम्नलिखित आधार है-

(1) धरातल पर पाए जानेवाले भौगोलिक दशाओं में एकरूपता:- किसी खास भौगोलिक प्रदेश में धरातल, जलवायु, वनस्पति एवं कृषि कार्य की पद्धति एक जैसी होती है। अतः क्षेत्रीय भौगोलिक विशेषता के आधार पर इसे एक निश्चित कृषि प्रदेश के अंतर्गत रखा जाता है।

(2) खेती का तरीका:- बिहार के विभिन्न भागों में खेती के तरीके अलग-अलग किस्मों के है। खड़गपुर के पहाड़ी भाग में सीढ़ीनुमा खेत, उत्तरी बिहार के सघन आबादी वाले क्षेत्रों में छोटे-छोटे खेतोंमें फसल लगाए जाते हैं। बाढ़ वाले क्षेत्र में पकीली मिट्टी में धान तथा खेसारी का फसल उत्पादन होता है वर्षा के कमी वाले क्षेत्र में Dry Farming पद्धती अपनाई जाती है।

(3) किसान एवं श्रमिक संगठन:- किसी क्षेत्र में कृषि विकास के लिए किसान एवं मजदूरों के आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशाओं का अध्ययन, किसान एवं श्रमिक संगठनों का कार्य पद्धति, उनकी संख्या, जरूरत एवं उनकी उपस्थिति से उत्पन्न समस्याओं की जानकारी क्षेत्र परिपेक्ष में बहुत ही जरूरी है। कभी-कभी मजदूरों की कमी के कारण इस तरह का संगठन आपसी सहयोग के द्वारा भी खेती करने में मदद करती है। सहकारी कृषि पद्धति मुख्य रूप से चावल उपजाने वाले क्षेत्र में देखा जाता है।

2020-7-2

* **बिहार के कृषि प्रदेश :-** यह निम्नलिखित कृषि प्रदेश है—

(i) उत्तर - पश्चिम बिहार का गन्ना - चावल एवं गेहूँ क्षेत्र
(ii) उत्तर - पूर्वी बिहार का चावल - गेहूँ एवं जूट क्षेत्र
(iii) मध्यवर्ती बिहार का मिश्रित कृषि प्रदेश
(iv) दक्षिण - पश्चिम बिहार का चावल - गेहूँ एवं खेसारी क्षेत्र
(v) मध्य - दक्षिणी बिहार का चावल - गेहूँ एवं मक्का क्षेत्र
(vi) दक्षिणी बिहार के दक्षिणी भाग में चावल गेहूँ एवं गन्ना क्षेत्र

(i) उत्तर - पश्चिम बिहार का गन्ना - चावल एवं गेहूँ क्षेत्र :- बिहार के उत्तर पश्चिमी भाग में पूर्वी एवं पश्चिमी चम्पारण, सीतामढ़ी, सिवान एवं गोपालगंज जिले इस प्रदेश में आते हैं। इस प्रदेश में 40% भूभाग पर गन्ना की खेती 30% पर चावल की खेती 20% पर गेहूँ 10% पर अन्य फसलें उपजाई जाती है। चूना प्रधान मिट्टी होने के कारण गन्ना विशेष रूप से उपजाया जाता है। चावल एवं गेहूँ इस प्रदेश की अन्य महत्वपूर्ण फसलें है।

(ii) **उत्तरी पूर्वी बिहार का चावल - गेहूँ एवं जूट क्षेत्र:-** इसके अंतर्गत पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज एवं अररिया जिलें आते है। कुल जोत की भूमि के 50% से अधिक भूभाग में चावल की खेती होती है। धान के बाद गेहूँ, जूट एवं राई की खेती होती है।

कम महत्वपूर्ण फसलों में मकई, खेसारी, आलू एवं विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ है। इस कृषि प्रदेश में महानन्दा, कोसी, कानखड एवं अन्य छोटी नदियाँ जलोढ़ मिट्टी बाढ़ के मैदान में बिछाती है। साथ ही साथ तारक्षेत्र एवं जल जमाव की समस्या कृषि कार्य में बाधा डालती है। जूट के उत्पादन में यह क्षेत्र पूरे बिहार में सबसे आगे है।

(iii) मध्यवर्ती बिहार का मिश्रित कृषि प्रदेश:- इस कृषि प्रदेश में कुछ भिन्नता के साथ दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल एवं समस्तीपुर जिले आते हैं। इस क्षेत्र में गेहूं, मकई, चावल एवं गन्ना की खेती वरीयता के क्रम में आती है। आम, लीची, आलू एवं विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियों की खेती भी हो रही है।

गंगा के किनारे मध्य बिहार में गेहूँ, चावल, मकई एवं गन्ना की खेती (वरीयता के क्रम में आती है आम, लीची, आलू एवं विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियों की) होती है। विशेषकर मुजफ्फरपुर, वैशाली, बेगूसराय, खगड़िया एवं मधेपुरा जिला में की जाती है क्योंकि यह सभी जिला नदी के कछारी क्षेत्र में पड़ता है। यहाँ की मिट्टी उपजाऊ एवं जलोढ़ है। इस कृषि प्रदेश के विभिन्न जिलों में फसलों के उत्पादन संबंधी एकरूपता नहीं रहने के कारण इसे मिश्रित कृषि प्रदेश के नाम से जानते हैं।

(iv) दक्षिण-पश्चिम बिहार का चावल-गेहूँ एवं खेसारी:-
इस प्रदेश के अंतर्गत भोजपुर, बक्सर, औरंगाबाद एवं जहानाबाद जिले आते हैं।

इन सभी जिलों में चावल, गेहूँ एवं खेसारी का उपज पुरानी जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्र में होती है।

(v) मध्य दक्षिणी बिहार का चावल गेहूँ एवं मक्का क्षेत्र :— इस कृषि प्रदेश के अंतर्गत पटना, नालन्दा, शेखपुरा, जमुई, लखीसराय एवं मुंगेर जिले आते है। इस प्रदेश में चावल, गेहूँ एवं मकई की खेती विशेष रूप से होती है। गंगा नदी के किनारे जहाँ परवल, तरबूजा, और ककरी एवं शकरकंद की खेती होती है, वहाँ प्राकृतिक तटबंध के दक्षिण वाला क्षेत्र में वर्षा ऋतु को छोड़कर वर्ष के शेष भाग में सब्जियाँ उपजाई जाती है। लगभग 40 से 60% भूमि पर चावल उपजाई जाती है। मोकामा टाल के क्षेत्र में चना एवं खेसारी भी उपजाई जाती है। लगभग केन्द्र सरकार बड़हिया टाल विकास प्राधिकरण की स्थापना के लिए विचार कर रही है। इससे इस प्रदेश में दलहन एवं तेलहन के उत्पादन में वृद्धि होगी। बिहार-शरीफ के आसपास आलू एवं गाजर की खेती भी विशेष रूप से होती है।

(vi) दक्षिणी-बिहार के दक्षिणी भाग में चावल, गेहूँ एवं गन्ना क्षेत्र:— इस कृषि प्रदेश के अंतर्गत चावल, गेहु एवं गन्ना की खेती मुख्य रूप से होती है। इसके अंतर्गत कैमूर, रोहतास, भागलपुर, गया, नवादा एवं बाना जिले आते हैं। इस क्षेत्र की पुरानी जलोढ़ मिट्टी में चूना का अंश होने के कारण चावल, एवं गेहूँ के अलावा गन्ना की उपज होती है। वर्षा की कमी के कारण प्रत्येक वर्ष इस क्षेत्र में सुखाड़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है।